हिमाचल प्रदेश के लोकगीतों में वसंत

MAHESH SHARMA
Research Scholar, Depertment of Music, Panjab University Chandigah

सार संक्षेपिका

ऋतुराज बसन्त का आगमन होते ही प्रकृति में उसका स्वागत करने के लिए सब के मन में विशेष उल्लास रहता है। सृष्टि का कण–कण पुलकित हो उठता है। हिमाचल प्रदेश के विभिन्न भागों में अनेकों लोकगीत प्रचलित हैं जो बसंत ऋतु का वर्णन करते हैं। बसन्त के आगमन पर कुल्लू के बाहय सराज में 'धरमाड़' गीत गाये जाते हैं। मण्डी जनपद में मिरासी समुदाय के लोग घर–घर जाकर बसन्त के गीत गाते हैं। लोकसंस्कृति की ऐसी अमूल्य धरोहरों के प्रति नई पीढ़ी में रूचि बढ़ाने तथा इनके संरक्षण एवं संवर्धन हेतु उचित कदम उठाना नितान्त आवश्यक है।

बीज शब्द

हिमाचल प्रदेश, लोकगीत, वसंत

भूमिका

भारत विभिन्न संस्कृति, भाषा तथा ऋतुओं का देश है। इन सभी ऋतुओं में वसंत का महत्व अधिक है। ऋतुराज बसंत प्रकृति का उत्सव है। इस दिन प्रकृति बसंत ऋतु में सोलह कलाओं से अलंकृत हो उठती है। भगवान कृष्ण ने गीता में 'ऋतुनां कुसुमाकर' कहकर ऋतुराज वसंत को अपनी विभूति माना है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार वसन्त का जन्म माघ शुक्ल पंचमी के दिन हुआ। बसन्त ऋतु में चारों ओर हरियाली और सुवासित वातावरण प्रत्येक मन को मोह लेता है। फूलों से लदी लताएं तथा पीली सरसों के खेतों की मादकता प्रकृति के अपूर्व यौवन व सौन्दर्य को दर्शाती है। सूर्य जब सुबह–सवेरे निकलकर सुन्दर प्रभा बांटता है, तो मौसम की अंगड़ाई में सुरभियां प्यार उडेलती हैं। लहलहाते हरे–भरे खेत, फूलों के रंगत की सुंदर झलक, आमों के ऊपर पड़ा बूर, किसी मतवाली कोयल की मनमोहिनी आवाज़ समस्त वातावरण को आनंदमयी कर देती है। फिर बसंत में रंग जाता है सारा संसार, कायनात, समस्त मानवता।

मौसम का गुलाबी रंग। कोमल–कोमल शाखाओं पर फूटते सुर्ख अनार। सर्दी तथा गर्मी आपस में आंख–मिचोली खेलते हुए अतीत के पैरों में वर्तमान के अति सुंदर चिन्ह छोड़ जाते हैं। किसान अपनी कमाई की खुशी के चिन्ह भरपूर खिली पक रही फसलों के सुनहरी दृश्य देखते हुए घरेलू मजबूरियों से निजात पाने की ललक में तत्पर रहते हैं। बागों में तितलियां, भंवरे, कोयल, मोर, पपीहे अन्य पक्षी उपवन में दिलकश कलोल करते हुए बसंत को बासंती बना देते हैं। भव्य फूल तथा कलियों के रूप बसंत ऋतु को दिव्यता प्रदान करते हैं। पक्षियों की चहचहाट सूर्य की किरणों के साथ मानवता को प्रसन्नता का संदेश देती है। बसंत ऋतु में एकता, सदभावना, नेतृत्व, दृढ़ता आपसी भाईचारे का संदेश देते हैं प्रवासी पक्षियों के झुण्ड। यही बसंत की खूबसूरती है।

बासंती उल्लास, उमंग, उत्साह के साथ जीवन की दिशाधारा को बदलती नज़र आती हैं। इसीलिए तो बासंती ब्यार हर वर्ष उमगती हुई आती है। जीवन में एक नूतन उल्लास की चहक और ज्ञान की महक बिखेरती चली जाती है। यह एक ऐसा अपूर्व एहसास होता है, जो उसे महसूस करने वालों को ही होता है। वस्तुतः प्रकृति जब इठलाती, बलखाती हुई धरा में पग–पग पर कण–कण के सम्पूर्ण यौवन के साथ मधुरता व सरसता का संचार करती आती है तो बसंत के आने का एहसास हो जाता है। प्राकृतिक सुंदरता नूतन परिवेश में नज़र आती है। इसी उल्लासमय, उत्साहवर्धक पृष्ठभूमि में प्रेरणादायक बसंत पर्व पावनमय वातावरण में सर्वत्र मनाया जाता है। यह पर्व कला के विविध आयामों, शिक्षा, विद्या साधना का भी और नूतन संकल्प ग्रहण करने का उत्साहवर्धक पर्व भी है। यह मानव जीवन के रूप में उपलब्ध स्वर्णिम अवसर को सार्थक बनाने के लिए प्रेरित करता है और जीवन में एक नूतन उत्साह एवं उल्लास का संचार करता है।

बसंत की देवी सरस्वती ज्ञान, नवनिर्माण, संगीत तथा ललित कला इत्यादि रचनात्मक कार्यों की अधिष्ठात्री देवी है। ज्ञान, संगीत, ललित कलाओं व वाणी सीखना रचनात्मक कार्य संस्कृति की अधिष्ठात्री देवी महासरस्वती है और इन्हें महादेवी का पद प्राप्त है। सरस्वती शब्द तीन शब्दों से निर्मित है, प्रथम 'सर' जिसका अर्थ सार, 'स्व' स्वयं और 'ती' जिसका अर्थ सम्पन्न है। जिसका अभिप्राय है जो स्वयं ही संपूर्ण सम्पन्न हो। ब्रह्मण्ड के निर्माण में सहायता के लिए ब्रह्मा ने महादेवी सरस्वती को अपने ही शरीर से उत्पन्न किया था। इनके ज्ञान से प्रेरित हो ब्रह्मा जी ने समस्त जीवित तथा अजीवित तत्वों का निर्माण किया। देवी सरस्वती का एक नाम ब्रह्माणी भी है। देवी सरस्वती को वेदमाता के नाम से भी जाना जाता है। चारों वेद देवी के ही स्वरूप हैं तथा उन्हीं की प्रेरणा से ब्रह्मा जी द्वारा उत्पन्न किया गया है। देवी का वाक्शक्ति से भी घनिष्ठ सम्बन्ध है। वाक्शक्ति सिद्वि प्रदान करती है। श्वेत रंग देवी को अत्यंत प्रिय है तथा इसी वर्ण से सम्बन्धित द्रव्यों, तत्वों का प्रयोग करती है। साथ ही श्वेत हंस, श्वेत कमल तथा वीणा इन्हें विशेष प्रिय है तथा इन्हें धारण भी करती हैं। वचन द्वारा भावप्रकाश करना तथा प्रेम सम्बन्धित निवेदन भी देवी की कृपा से सफल होते हैं। बसंत पंचमी या माघ शुक्ल पंचमी तिथि देवी सरस्वती को समर्पित है। इसीलिए हिमाचल में गेहूं तथा जौ की स्वर्णिम बालियां देवी सरस्वती को अर्पित की जाती हैं।

वसंत पंचमी का पावन पर्व भगवती सरस्वती की जयंती के रूप में भी मनाया जाता है। इस पावन अवसर पर जब स्वयं प्रकृति बसंत अवतरण के रूप में भगवती सरस्वती का अभिनंदन करती है, तब नवीन अंकुर प्रत्येक वृक्ष पर परिलक्षित होते हैं। प्रकृति के कण–कण में मुस्कान के पुष्प खिल पड़ते हैं। जीवन में देवी सरस्वती का अनुग्रह अवतरित होने पर मनुष्य के स्वभाव, दृष्टिकोण, क्रियाक्लापों में बसंत ही बसंत बिखरा हुआ दिखाई देता है। पेड़–पौधों पर नवीन पल्लवित पुष्प अपने व्यक्तित्व को निर्मल, निर्दोष, आकर्षक और सुगंधित बनाने की प्रेरणा देते हैं। कोयल की

मस्ती भरी कूक, भौरों का गुंजन, जीने की कला सिखाते हैं। हर जड़ चेतन में बसंत ऋतु में सृजनात्मक उमंग परिलक्षित होने लगती है, जो उसे ऋतुराज का गौरव प्रदान करती है।

बसंत जैसा उल्लास, कलात्मक प्रवृतियों का विकास और ज्ञान संवर्धन का प्रयास ही सच्चे अर्थों में बसंत पर्व को सार्थकता प्रदान कर सकता है। भगवती सरस्वती का अनुग्रह कला, ज्ञान, संवेदना हमारे जीवन में आए, हमारे विचारों के आदर्शवादिता की उच्चस्तरीय सद्भावनाओं का समावेश हो। ज्ञान की संपदा से बढ़कर और कोई संपदा नहीं। हमारे जीवन का सर्वांगिण विकास होता चला जाएगा। इस महान प्रेरक पर्व पर विद्या के वास्तविक स्वरूप को भी समझना अनिवार्य है। भगवती सरस्वती का वाहन मयूर है। प्रकृति ने मयूर को कलात्मक सुस्सजित बनाया है, हमारी अभिरूचि भी प्रेम, सौंदर्य, स्वच्छता, सुसज्जनता के प्रति जागे।

बसंत तो वह मौसम है, जब फूल ही नहीं कांटे भी महक जाया करते हैं। आहट देते बसंत की पग ध्वनि से धरती की गोद भर जाती है। कविवर त्रिलोचन ने कहा है, 'सीधी भाषा बसंत की, कभी आंख से समझी, कभी कान ने पाई, कभी रोम–रोम से प्राणों में भर आई और है कहानी दिगन्त की'। इस ऋतु के बिना और मदमाती स्त्री के बिना भी कोई भी मौसम और जीवन पूर्ण नहीं होता। तभी एक यौवना कहती है, 'हवा हूं, हवा में बासंती हवा हूं। हंसी सब दिशाएं, हंसे लहलहाते हरे खेत सारे, हंसी चमचमाती भरी धूप प्यारी, बासंती हवा में हंसी सृष्टि, सारी हवां हूं, हवा में बसंती हवा हूं।' बसंत के त्योहार में जितनी भी चीजें शामिल होती हैं–जैसे पीले रंग के परिधान, पीले और बसंती रंग के फूल, बेर, गाजर, मौसमी फल आदि।

बसंत में भगवान श्रीकृष्ण और भगवान शिव को पूजने का भी विधान है। श्रीकृष्ण अनासक्त उल्लास के प्रतीक हैं जबकि शिव समभाव और अनासक्ति के प्रतीक हैं। वैराग्य धारण करने के कारण यह गृहस्थी के प्रिय हैं। इसीलिए शिवरात्रि और होली पर्व इसी ऋतु में मनाये जाते हैं। बसंत में पीले रंगों का हमारे शरीर और रूह पर गहरा असर होता है। पीले रंग को आशावादी माना गया है। इसीलिये तो ये योगियों और फकीरों का भी प्रिय रंग है। कहते हैं इस रंग की कल्पना से ही मन में शांति और उत्साह का अनुभव होता है।

पतझड़ के बाद पेड़ पर नये–नये पतों का आना रंग–बिरंगे फूलों के साथ सरसों के पीले फूलों की छटा के बीच मधुर गीतों की गनगुनाहट इस ऋतु को और खुशगवार बना देते हैं। कहते हैं कि बसंत में सूरज की रोशनी पपीता, सरसों, बेर, अमरूद, कद्दू जैसी पीली चीज़ों पर पड़ने से इनके पोषक तत्व बढ़ जाते हैं। इसलिए बसंत ऋतु में इनका इस्तेमाल स्वास्थ्यवर्द्धक होता है।

हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जनपद में देवाधिदेव रघुनाथ के मंदिर में बसन्त का उत्सव धूमधाम से मनाया जाता है। प्रातः ही बासंती रंग भगवान रघुनाथ को समर्पित किए जाते हैं। दोपहर में भगवान रघुनाथ की मूर्ति लोकवाद्यों की धुनों के साथ ढालपुर मैदान में लाई जाती हैं। वहां पर

वैरागी समुदाय में से एक व्यक्ति भरत व दूसरा हनुमान बनता है। भरत का श्री राम के साथ मिलन होता है। रघुनाथ की मूर्ति को बड़े रथ में बिराजमान करके उसे ढालपुर मैदान के बीचों–बीच अस्थायी मंदिर तक लाया जाता है। वहां पूजा करने के बाद वैरागी गायकों द्वारा बसंत के गीत गाये जाते हैं और होरी गीतों का आरम्भ भी इसी दिन होता है। बसंत के आगमन के रूप में गाये जाने वाले एक गीत की बानगी इस प्रकार हैः–

नमी–नमी ऋत आई, नमी रे बहार आई।
अंबुआ भी फूले, केसुआ भी फूले,
अंबुआ भी फूले हां.....
बन में फूले बनराई मेरी सजनी।
नमी–नमी ऋत आई,नमी रे बहार आई।
एक हाथ में त्रिशूल डमरू, दूजे में भंग ली,
गले में शेष नाग,जटा में हो गंगरी।
नमी–नमी ऋत आई,नमी रे बहार आई।

'नई ऋतु आने पर उल्लासमय बहार आई है। आम, केसू, बनराई आदि फूल खिलने लगे हैं। भगवान शिव ने एक हाथ में त्रिशूल डमरू, धारण किया है,दूसरे हाथ में भांग ली है और जटा में गंगा को धारण किया है। नई ऋतु में नई बहार बड़ी अच्छी लग रही है।'

ऋतुराज बसन्त का आगमन होते ही प्रकृति में उसका स्वागत करने के लिए सब के मन में विशेष उल्लास रहता है। सृष्टि का कण–कण पुलकित हो उठता है। ऐसा लगता है जैसे धरा अभिसारिका का रूप धारण कर प्रिय से मिलने के लिए व्यग्र हो उठी हो। बसंत ऋतु के प्रमुख देवता कामदेव और देवीरति हैं। इस मौसम में कामोतेजना हृदय में जगती है। बसन्त के आते ही नवयौवना अपने शरीर में अनेक परिवर्तनों का आभास करने लगती है। यौवन उसके अंग–अंग से फूट पड़ता है। काम देव अपने तीक्षण वाणों से उसके कोमल, मांसल, स्निग्ध और गदराए तन में मादकता और मस्ती भर देता है। लता आदि द्रुम निकंजों में बैठी कोयल उनके लिए आग पर घी का काम कर रही है। प्रस्तुत गीत इसकी पुष्टि करता हैः–

आई नई बहार ,मेरो नवरंग जोवन
आई नई बहार।
इक तो आई रित बसन्त, दूजे पूछे सखियो अपणो कन्त,
तीजो पिया–पिया पपीहा पुकारे मेरो नवरंग जोवन
आई नई बहार।

'मेरे यौवन, बसंत बहार आने पर सखियां मेरे प्रियतम के बारे में पूछ रही हैं कि वे कहां हैं? वे तो नहीं हैं उनके बिना पपीहे सी प्यासी मैं बसंत बहार का आनंद कैसे लूं।'

बसन्त के आगमन पर कुल्लू के बाहय सराज में 'धरमाड़' गीत गाये जाते हैं, यथाः–

डेई गो चेतरो रो महीनो, वे फुलटू सौवे फूली गए।
हासी–हासी जोदे वे पांछी सौब–सौब साओ भूली बे गए।
हौरो–हौरो डाड़ी डोली, जांदी–जांदी डोलिए जांदी।
हौरे पीउंणे फुलटू लाल फूले, खुशी ए खुशी दी फूले
ऐस–ऐस हासी दी मौन सौवी रै,भुली इ भुली गए।

'चैत्र मास में बसन्त आ गया है, सब पौधे फूलों से लद गये हैं। अनार के पौधों में लाल–लाल फूल प्रकट होने लगे हैं। पंछी भी हंसते–मुसकराते एक डाली से दूसरी डाली पर फुदकते हुए प्रेम में इस कद्र खो गये हैं कि उन्हें बाकी जगत के होने का आभास ही नहीं है। लाल पीले फूलों का रस चूसते पक्षी आनंद में सराबोर हो रहे हैं।'

मण्डी जनपद में मिरासी समुदाय के लोग घर–घर जाकर बसन्त के गीत गाते हैं। एक गीत इस प्रकार है:–

देखा जी हुण आई बसन्त बहार, कि मौसम आये रहेया।
नौवीं–नौवीं रुत आई कि नौवें आये फूल, देखो जी मैं लई आई फूलों के हार,
कि मौसम आये रहेया।
पानी जैसी पतली, पीवे जैसी पींली, ये रोग काहे को सताया मेरिये ननदे,
नौवीं–नौवीं रुत आई कि नौवें आये फूल, देखा जी हुण आई बसन्त बहार,
कि मौसम आये रहेया।
पिया घर आवे, सब दुख जावे, एही मेरे हिरदे री बमारी ओ मेरी ननदे।
नौवीं–नौवीं रुत आई कि नौवें आये फूल, देखा जी हुण आई बसन्त बहार,
कि मौसम आये रहेया।

'मौसम बसन्त बहार का आ गया है। नयी ऋतु आई और नये–नये फूल खिले हैं, देखो जी मैं बसंत बहार में उन फूलों के हार बनाकर लाई हूं। ननद भाभी से पूछती है, पानी की तरह पतली और सरसों की तरह पीली कमज़ोर कैसे हो गई है, भाभी ये रोग कहां से लगा के आई है, देख मौसम बसन्त बहार का आ गया है। भाभी कहती है, जब मेरे पिया घर आएंगे,मेरे सब दुख दूर हो जाएंगे, मेरी ननद, मेरे दिल की बीमारी तो यही है। मौसम बसन्त बहार का आ गया है।'

कांगड़ा क्षेत्र में भी बसन्त के अनेक गीत गाए जाते हैं। एक गीत इस प्रकार है:–

मैं न खेलां माई जी मैं न खेलां, भोले नाथां दे संग, होली मैं न खेलां ।
मढ़िया मसाणी रैंहदा, हांजी मैं न खेलां,
अक ता घतूरा खांदा, मती पींदा भंग जी,डमरू बजांदा लांदा अदभुत रंग,
होली मैं न खेलां ।

उपरोक्त बसंत गीत में पार्वती जी अपनी माता से कह रहीं हैं कि मैं भोलेनाथ जी के साथ होली नहीं खेलूंगी। उनका निवास शमशान में है और वे आक भांग तथा धतूरे का सेवन करते हैं। वे

डमरू बजाकर सबकी सुध–बुध हरकर अपने ही रंग में रंग देते हैं। अतः मैं उनके साथ होली नहीं खेलूंगी।

शिशिर ऋतु के ठिठुराए हुए जड़ और चेतन पर बसन्त में निखार आता है। मन में उमंगें उत्पन्न होती हैं और तरंगें उठती है।यद्यपि बसंत का आगमन फागुन मास में माघ शुक्ल पंचमी तिथि से आरम्भ हो जाता है, परन्तु हिमाचल प्रदेश में बसंत पंचमी के उत्सव के अतिरिक्त बसन्त के सभी आयोजन फागुन और चैत्र मास से आरम्भ हुए माने जाते हैं। बसंत के आगमन में चहुं ओर पहाड़ी समाज में गीतों की स्वर लहरी का माधुर्य चारों ओर एक अदभुत खुशी प्रदान करता है।

हिमाचल प्रदेश के विभिन्न भागों में अनेकों लोकगीत प्रचलित हैं जो बसंत ऋतु का वर्णन करते हैं। लोकसंस्कृति की ऐसी अमूल्य धरोहरों के प्रति नई पीढ़ी में रूचि बढ़ाने तथा इनके संरक्षण एवं संवर्धन हेतु उचित कदम उठाना नितान्त आवश्यक है।

सन्दर्भ

ठाकुर, डॉ.सूरत (2017) हिमाचल प्रदेश के ऋतुगीत, प्रकाशन संस्थान दिल्ली
व्यथित, गौतम शर्मा (2012) हिमाचल के लोकगीत, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली

साक्षात्कार

डॉ. सूरत ठाकुर सेवानिवृत प्रोफेसर (संगीत) एवं वरिष्ठ साहित्यकार कुल्लू , हिमाचल प्रदेश।
रूपेश्वरी शर्मा, सेवानिवृत अध्यापिका एवं लोक गायिका, पुरानी मण्डी, मण्डी, हिमाचल प्रदेश।
जनमेजय गुलेरिया प्रवक्ता (संगीत) गांव रक्कड़, धर्मशाला, कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश।
दीपक शर्मा, वरिष्ठ साहित्यकार, गांव व डाकघर निरमण्ड, कुल्लू, हिमाचल प्रदेश।